Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505S01V13P013

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research May'25
Issue–V(I), Volume–XIII

डॉ.राम बोध पाण्डेय लिखित महाकाव्य युगप्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज: एक अध्ययन

डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
अध्यक्ष हिंदी विभाग
डॉ . श्री .नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज कोलाड, तहसील - रोहा,
जिला - रायगड, महाराष्ट्र पिन - ४०२३०४
मो -९७६६७३१४७०
Email- sureshamalpure05@gmail.com

सारांश :-

भारतवर्ष में अनेक शूरों का पराक्रम हमने देखा है । पूरब से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर तक अनेक शूरवीरों ने अपना शौर्य पराक्रम दिखाकर अखंड भारत का निर्माण किया है । महाराष्ट्र के शूरवीर योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम पूरे विश्व में फैल चुका है । युगप्रवर्तक और जानता राजा के रूप में उनको हम सब लोग पूजते हैं । छत्रपति शिवाजी महाराज ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी थे जिनका भारतीय इतिहास में आगमन एक युगांतरकारी घटना है उनका साहस शौर्य पराक्रम संगठन शक्ति और राजनीतिक चातुर्य दूर दृष्टि विचार आदि उच्च कोटि के गुण उनके व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं । ऐसे महान युग प्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन पर हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे रामबोद पांडे ने महाकाव्य लिखा है । यह उनका चौथा ऐतिहासिक महाकाव्य है । जिसमें छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक का यथार्थ चित्र काव्यात्मक दृष्टि से किया है । यह बहुत बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जाती है । प्रस्तुत महाकाव्य में कल २० सर्ग है, प्रारंभ से लेकर अंत तक विभिन्न छंदों का चित्रण भी किया है । अलंकार एवं रस युक्त भाषा प्रभाव भी इसमें दिखाई देता है ।

कुंजी शब्द :- युग प्रवर्तक, युग पुरुष, छत्रपति, पराक्रम, राजनीतिक चातुर्य, दूरदृष्टि, राज्याभिषेक, महाकाव्य आदि ।

संशोधन पद्धति :- सर्वेक्षण आत्मक तथा विश्लेषण आत्मक संशोधन पद्धति ।

संशोधन का उद्देश्य :-

१] प्रस्तुत महाकाव्य के नायक छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन परिचय को देखना ।
२] डॉ.राम बोध पाण्डेय का जीवन परिचय देखना ।
३] छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्य को देखना ।
४] छत्रपति शिवाजी महाराज की युद्ध नीति को देखना ।
५] छत्रपति शिवाजी महाराज की राजनीतिक योजना को देखना ।
६] जानता राजा के रूप में छत्रपति शिवाजी महाराज को देखना ।
७] प्रस्तुत महाकाव्य की भाषा सौंदर्य को देखना ।

प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य में २१ वीं सदी के प्रसिद्ध कवि डॉ.राम बोध पाण्डेय जी का जन्म १९४० में हुआ । उनका जन्म एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ । प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई उच्च शिक्षा पी. एच .डी १९६० में हुई । आगे एक प्राध्यापक की नौकरी की २००१ में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया, साहित्य सर्जन का कार्य भी उनका चला रहा ।

रचनाएं :-

काव्य :- निहारिका, गीत मंजरी आदि ।

महाकाव्य :- कुंती ,देववृत्ता भीष्म, भगवान परशुराम और युग प्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज आदि ।

नाटक :- अरावली का शेर ,इंसाफ का मंदिर, तराइन की चौक, आंखों की आहुति ,चाणक्य महान, धन्य हरिश्चंद्र ,चक्रव्यूह, शकुंतला, अग्नि परीक्षा, महारथी कर्ण, दहेज की विधि, सुहाग की सौगंध, आंखों का झरोखा, आंसू के फूल, वतन के लिए, आंचल की छांव आदि ।

एकांकी :- रंगायतन ।

कहानी संग्रह :- पूरे चांद की रात ।

डॉ.राम बोध पाण्डेय जी ने उस गौरवशाली परंपरा को पुनर्वता प्रदान करते हुए उसके कम को नए सिरे से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया है । २००४ में यह महाकाव्य प्रकाशित हुआ इसका प्रकाशन महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई के सौजन्य से हुआ ।

डॉ . राम बोध पाण्डेय लिखित महाकाव्य युगप्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज: एक विवेचन

प्रस्तुत महाकाव्य में कुल २० सर्ग है । प्रत्येक सर्ग में छत्रपति शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व को नए-नए आयाम में लिखने की कोशिश की है । इस महाकाव्य के संदर्भ में प्रो अभिराम राजेंद्र मिश्रा लिखते हैं- "राम बोध पाण्डेय प्रणित कालजई महाकाव्य निश्चय ही नई सहस्राब्दी का प्रथम मानक हिंदी महाकाव्य सिद्ध होगा । भाषा और भाव दोनों ही दृष्टि से यह महाकाव्यों की वर्तमान परंपरा में मिल का पत्थर बनेगा ऐसा मेरा विश्वास है इस उपलब्धि के लिए रामबोद को बधाई के पात्र है ।"-१

प्रस्तुत महाकाव्य में प्रारंभ से लेकर अंत तक विभिन्न छंदों में समाहित शिवाजी महाराज की दिव्य छवि इस अनुष्ठान में आकर्षण का मुख्य केंद्र तो है ही उसमें निहित है । अन्य जीजीविशा भारी जिज्ञासा को वह भूख जो कभी तृप्त होने का नाम नहीं लेती इतिहास के पन्नों में वैसे तो अनेक तेजस्वी महापुरुषों के नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है किंतु उनमें छत्रपति शिवाजी महाराज की कुछ अलग ही पहचान है । इसके संदर्भ में डॉ . करुणा शंकर उपाध्याय लिखते हैं –" छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्यारोहण के ३५० वे वर्ष वर्ष पर प्रकाशित हो रही यह काव्य कृति हिंदी महाकाव्यों की राष्ट्रीय संस्कृत धारा को समृद्ध करती है । यह अत्यंत पठानी संग्रह नियम एवं नवीन संदर्भों के सर्वथा अनुरूप है । इस संदर्भ महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए पांडे या अभिनंदन यह है है है ।"-२

उनका शौर्य अधिक था महाकवि भूषण ने भी वर्णन शिवा बावनी में किया था । शिवाजी महाराज ने एक ऐसे हिंदू लोकतंत्र का सपना देखा था । जिसमें हिंदू मुस्लिम दोनों का सामंजस्य था एकता की भावना अधिक थी आगे भारत की आजादी के लिए बहुत सारे क्रांति कारकों ने उनकी प्रेरणा भी ली है । इसके संदर्भ में तो अभिराज राजेंद्र मिश्रा जी [नांदिवाक] में लिखते हैं –" छत्रपति शिवाजी पर सांगोपांग दृश्य प्रणीत कल २० सरगों में निबंध निबंध उनका नवीनतम महाकाव्य युग प्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज निश्चय ही नई सहस्राब्दी का प्रथम मानक हिंदी महाकाव्य सिद्ध होगा । भाषा का लालित्य शब्द और अभिव्यक्ति की संस्था पाठक के मन को मोह लेने में पूर्ण सक्षम है भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से यह महाकाव्य हिंदी महाकाव्यों की आधुनिक परंपरा में मिल का पत्थर सिद्ध होगा और इस पर विभिन्न दिशाओं से अभिनंदन के अनगिनत फल बरसेंगे ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है ।" -३

प्रथम सर्ग में ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों का जीवन का चित्रण किया है । जिस समय में इस धरा धाम पर अवतीर्ण हुए सारा देश उत्तर में मुगल शाही दक्षिण में आदिलशाही, कुतुबशाही एवं निजामशाही की निरंकुशता और कट्टरता के पत्तों के बीच बुरी तरह पीस गया था ।

जैसे –" उत्तर मध्यकाल भारत का उथल-पुथल से भरा रहा,
जब भीम शक्तियों द्वारा बड़ा क्रांति हुई धारा,
भारत की संस्कृति पर होता था प्रहार तब आए दिन,
छन हो चुकी थी स्वदेश की असलीयत्ता की परंपरा ।"-४

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505S01V13P013

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research May'25
Issue–V(I), Volume–XIII

छत्रपति शिवाजी महाराज को जन्म दिया जीजाबाई ने । मां जीजाबाई स्वाभिमान की साक्षात प्रतिमूर्ति थी । उन्होंने अपने पुत्र के संस्कारों में अमृत्व का जो संजीवनी रस घोला वही आगे चलकर उनके भावी शिल्प का आधार बना था । जैसे –" सन सोलाह सौ तीस ई. वर्ष था ,

भूमिका में आ चुका संघर्ष था ,
समय के भी पंख कितने एकदम ,
दृष्टि में हिंदुत्व का उत्कर्ष था।" - ५

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म १९ फरवरी१६३० में हुआ था। इस युगपुरुष ने शिवनेरी पर जन्म लिया था अंधकार की मुहाने के लिए विवाह प्रकाश तेज था अंधकार को मिटाने का कार्य किया। छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्म के बाद उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए माता जीजाबाई के अतिरिक्त संरक्षक दादाजी कोंडदेव ,आध्यात्मिक गुरु समर्थ रामदास आदि की अहम भूमिका दिखाई देती है । उनके बचपन में अनेक प्रकार के शस्त्र चलाने के लिए सिखाए , घुडस्वरी , तलवार चलाना आदि भी सिखा दिया । माँ जीजाबाई ने महाभारत और रामायण के आदर्श पात्र ,योद्धा ,पराक्रमी पात्रों की कथा सुनाई । इससे बेटा शिवबा भी पराक्रमी शूर योद्धा बने और साम्राज्य को संभाले अच्छे संस्कारों के साथ छत्रपति बहुत बड़े शूर योद्धा बने। जैसे -

"कोंडदेव महान पूना आ गए ,
चेतना की किरण बनकर छा गए ,
अस्त्र शिक्षा के प्रखर पंडित स्वय,
सुप्त थी जो आग , वे दहका गए । "-६

अब सतत शास्त्र अभ्यास चला रहा , युद्ध कौशल्या में भी निपुण बने थे । शत्रु के दाव पेच को भी पहचानते थे ।शत्रु के साथ कैसे लड़ाई करना यह सब कोडदेव जी ने सिखाया था । ऐसे समय अब मां ने शादी करने के लिए तैयार किया । जैसे -

" मुधोजी निंबालकर की लाडली ,
रही श्रेष्ठतम संस्कारों में पाली ,
रूप रस और गंदगी थी स्वामिनी ,
सुधास्नाता , मृदुल मंजुला नवकली। " - ७

संस्कार और सौंदर्य से भारी मुधोजी निंबालकर जी की लाडली सइबाई के साथ शिवाजी महाराज का विवाह हो गया । नारी संरक्षण के बारे में कल्याण की बहू गौहरबानो का प्रसंग भी बहुत मार्मिक बन पड़ा था । उनको केवल मां शब्द की सुदृढ़ कगार से ही वापस लौटा दिया । ऐसी सुंदर यह नारी को देखकर उनका आदर के साथ घर पहुंचाया । जैसे-

"देख रहा हूं आप तो , मेरी मां की ही परछाई है ,
आपमें , उनमें फर्क नहीं है ,आप ही जीजाबाई है ,
आप सी होती वे खूबसूरत , तो मैं भी सुंदर होता ,
कदम चूमते आज आपके , नज़रें एक ललचाई है। "-८

आगे और सरदार अफजल खान की हिम्मत को हराया। चूहा कहने वाले अफजल को चुटकी में खत्म कर दिया । आगे पुणे में लाल महल में शाहिस्तेखान की उंगलियां तलवार से काट डाली। इस महाकाव्य में छत्रपति शिवाजी महाराज के विरता को दिखाया है । कवि ने इसके आगे की अन्य घटना प्रसंग को छोड़कर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना को ही फलागत के रूप में चित्रित किया है १६३६ के बाद आदिलशाह अपने खिलाफ बगावत रोकने के लिए शाहजी को हकीम नियुक्त किया था । आगे स्वराज की राजधानी कोकण में रायगढ़ में बसाई थी

।१६७४ में शिवाजी का जब राज्याभिषेक हुआ तब उनके पास ३०० से अधिक किले और विस्तृत भूभाग आ चुका था । उनके छत्रपति बनाने का चित्रण करते हुए कई लिखते हैं । जैसे -

" विरद छत्रपति का कर धारण,
महाराज श्रीमंत हुए,
धरती मां फूली न समाई,
सुख के निमिषा अनंत हुई । "-९

कवि ने आगे अन्य घटनाओं को छोड़कर औरंगजेब को ललकारते हुए उसे जो कई चेतावनी दी वह उनके गरिमा पूर्ण व्यक्तित्व की एक झलक थी । जैसे –

" दिल्ली नहीं दूर अब हमसे ,
आगरा तो बस एक पड़ाव ,
भूल से भी मत आज जबड़े में ,
जिंदा अब भी तेरे घाव ।" - १०

एक सैन्य नेता की दृष्टि से शिवाजी की महानता की तुलना नहीं की जा सकती ।उन्होंने औरंगजेब के क्रूर शासन के वृक्ष शिवाजी का क्षमता मूलक न्याय पर आधारित शासन रामराज्य से काम नहीं था ।

महाकाव्य की भाषा सौंदर्य :-

डॉ.राम बोध पाण्डेय द्वारा लिखित महाकाव्य युगप्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज इस महाकाव्य की भाषा सहज और सरल है। भाषा की परिधि और इतिहास बोध भी अधिक मात्रा में दिखाई देता है । कुल बीस सरगों में निबंध यह एक महाकाव्य निश्चय ही नई सहस्राब्दी का प्रथम मानक हिंदी महाकाव्य माना जाता है । शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व की विराटता एवं अतलता को विभिन्न अलंकरण कौन से देख परख कर उसे मनमोहन शब्द चित्रों में जी सूक्ष्मता के साथ फिर राय है वह अद्भुत ही नहीं परम अद्भुत है। भाषा का लालित्य शब्द संस्थाओं और अभिव्यक्ति की सरसता पाठक के मन को मोह लेने में पूर्ण सक्षम है ।भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से यह महाकाव्य हिंदी महाकाव्य की आधुनिक परंपरा में मिल का पत्थर साबित होगा यह महाकाव्य सभी स्थापित मानवों के सर्वथा अनुरूप एक उत्कृष्ट काव्य होती है ।यह भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से अभिनंदनीय है कि कवि रामबोध पांडे जी ने छंदों और अलंकारों की समुचित योजना द्वारा उसमें काव्यात्मक औदात्य भर दिया है ।इस काव्य के संवाद भी अर्थवतापूर्ण और प्रभावशाली है । जैसे –

" करो स्थापित हिंदू स्वराज ,
अपेक्षा यही देश की आज ,
आर्य संस्कृति का बुझ न दीप ,
न लूटने पाए मां की लाज ।" -११

प्रस्तुत महाकाव्य की भाषा भंवाणुवर्तनी ,कसी हुई सुगठित , बिंब प्रधान, सुव्यवस्थित ,परिष्कृत प्रवाह में लालित्यपूर्ण और चित्रात्मकता भी इसमें दिखाई देती है ।बीच-बीच में प्रसंगरूप उर्दू के और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है शब्द विन्यास अत्यंत आकर्षक एवं सार्थक है। शब्द सलीके के साथ जड़े हुए मोतियों की तरह चमकते प्रतीत होते हैं महाकाव्य की भाषा में तीनों गुन और तीनों शक्तियों का सुंदर समन्वय हुआ है। उपमा रूपक अनुप्रास उत्प्रेक्षा प्रतीत दृष्टांत और अतिशयोक्ति आदि अलंकारों की छत पाठकों का मन मोह कर लेती है । यह सभी अलंकार काव्य में सहज स्वाभाविक रूप से विद्यमान है। इस महाकाव्य के माध्यम से सर्जन के क्षेत्र में काफी बड़ी लकीर खींच दी है कवि ने भाषा भाव और अभिव्यक्ति सभी दृष्टियों से उनकी यह कृति निसंदेह एक उत्कृष्टतम काव्य रचना है ।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं की डॉ .राम बोध पाण्डेय का यह महाकाव्य २१वीं सदी का श्रेष्ठ महाकाव्य रहा है। युगप्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्म से लेकर अंत तक का यथार्थ चित्रण अपनी प्रभावशाली सहज सरल भाषा में रस और अलंकार सहित चित्रण किया है। बीस सर्ग में यह महाकाव्य शिवाजी महाराज का जीवन संघर्ष उजागर करता है। यह महाकाव्य आने वाली पीढ़ी को नया संदेश देता है। ऐसे कालजई महाकाव्य के प्रणय के लिए डॉ .राम बोध को बधाई देता हूँ । इसी के साथ मेरी इस लेखनी को विराम देता देता हूँ ।

संदर्भ ग्रंथ :-

१] डॉ. राम बोध पाण्डेय -युगप्रवर्तक शिवाजी छत्रपति शिवाजी महाराज, प्रो .अभिराम राजेंद्र मिश्रा फ्लैप से
२] डॉ.राम बोध पाण्डेय- युगप्रवर्तक शिवाजी छत्रपति शिवाजी महाराज, डॉ .करुणा शंकर उपाध्याय फ्लैप से
३] डॉ . राम बोध पाण्डेय- युगप्रवर्तक शिवाजी छत्रपति शिवाजी महाराज, प्रो .अभिराम राजेंद्र मिश्र
[नांदिवाक] 5 जून 2023 शिमला
४] डॉ . राम बोध पाण्डेय- युगप्रवर्तक शिवाजी छत्रपति शिवाजी महाराज, प्रथम सर्ग पृ . ४९
५] वहीं, द्वितीय सर्ग पृ. ५७
६] वही ,तृतीय सर्ग पृ. ६५
७] वही, पंचम सर्ग पृ . ७३
८] वही ,एकादश सर्ग पृ . ११०
९] वही ,विशांति सर्ग पृ. १७४
१०] वही ,विशांति सर्ग पृ . १७८
११] वही ,सप्तम स्वर्ग पृ .८७